दो शब्द

र्प भगवान की फाँसी है। मानवी फाँसी का दण्ड तो कानून बनाकर हटाया भी जा सकता है, परन्तु इस ईश्वरीय फाँसी पर सावधानी से बचे रहने के अतिरिक्त कोई कानून नहीं चलता। इसके दंश का उपचार तत्काल ही होना आवश्यक है इस नाते उसे प्रत्येक व्यक्ति को शीघ्रतम पढ़ाया जाना चाहिए, परन्तु आश्चर्य है कि संसार के इतिहास और भूगोल रटाने की व्यवस्था तो है परन्तु सर्प के डसे जाने पर प्राण बचाने की शिक्षा कक्षाओं में कहीं नहीं दी जाती। ग्रन्थकारों ने इस विषय पर प्राय: नहीं लिखा और जिन्होंने लिखा है उन्होंने प्राय: सुने सुनाये का संकलन और सो भी इतनी क्लिष्ट शैली से लिखा है कि लोग उसे ग्रहण ही नहीं कर पाते।

ऐसी दशा में कविभूषण श्री रवीन्द्र शास्त्री ने यह सरल सुलभ और उपयोगी पुस्तक लिख कर एक भारी अभाव की पूर्ति की है। इसमें प्राच्य या पाश्चात्य उपयोगी बातें नहीं छोड़ी गई परन्तु सब कुछ ऐसे सरल रूप से लिखा है कि पढ़ने में ज्ञान बढ़ने के साथ साथ आनन्द भी आता है। इसी लिए आशा है कि यह रचना अधिकाधिक सज्जनों को रुचिकर होगी और उन्हें तथा उनसे इसे भेंट पाने वाले बाल बच्चों को भी प्राण रक्षा में पटु करेगी। इसी में लेखक के श्रम की सफलता और संसार का मंगल है।

आगरा—
वैशाख पूर्णिमा
१९९६

गणपतिचन्द्र केला
संचालक "सैनिक"

प्रतिभाशाली चिकित्सक

आचार्य,---गिरिवरनारायण जी वैद्य.

आगरा

के

कर कमलों में

सप्रेम

समर्पित

वक्तव्य

प्रेमी पाठकों के हाथों में आज हम एक ऐसी पुस्तक भेट कर रहे हैं, जो जीवन में कभी भी उपयोगी हो सकती है। हिन्दुस्तान में सर्प विष से हजारों दुर्घटनाऐं होती हैं:—और बहुत से लोग बिना उचित उपचार के ही मर हैं। प्रस्तुत पुस्तक इस विषय में प्रत्येक नरनारी को समान रूप से सहायक होगी, ऐसा हमारा विश्वास है। पुस्तक के लेखक राजवैद्य पं० रवीन्द्र शास्त्री अच्छे लेखकों में से हैं। और आपकी कई आयुर्वेदिक पुस्तकें प्रकाशित भी हो चुकी हैं। ऐसे लेखक की इस उपयोगी पुस्तक के प्रकाशने का हमें आनन्द है—और हम शीघ्र ही आपकी और पुस्तकें भी पाठकों की सेवा में उपस्थित करेंगे।

प्रेस के भूतों की कृपा से पुस्तक में कहीं २ गलतियां भी रह गई हैं जिनका हमें खेद है, अगले संस्करण में ये सब ठीक कर दीजायेंगी।

प्रकाशक:—

दयाशंकर शर्मा,

शंकर प्रेस,

शंकर बिल्डिंग, बेलनगंज, आगरा।

विषय सूची

—:❀:—

तृतीय परिच्छेद

सर्प विष चिकित्सा

—:o:—

प्रथम परिच्छेद

सर्प—मानव जाति का एक प्रधान दुश्मन है, प्रति वर्ष लाखों मनुष्य सर्प दंशन से मरते हैं। सन् १९२१ में केवल हिन्दुस्तान में ही १६३६६ मनुष्य सर्प दंशन से मरे थे। सर्प का दंशन प्रायः घातक होता है इस लिये इसका नाम ही भयजनक होगया है। सर्प के नाम मात्र से ही लोगों की आँखों के सामने मौत का खतरनाक रूप सामने आ जाता है। किसी महत्वपूर्ण कार्य में संलग्न जन समूह को भगा देने का शैतानी तरीका यह भी है कि साँप आया का हल्ला मचा दिया जाय इस अचूक तरीके का उपयोग भी किया जाता है और जन समूह को हटा देने में यह निश्चय ही लाजवाब सिद्ध होता है। घर में साँप के होने के सन्देह मात्र से ही अन्दर जाने की हिम्मत नष्ट हो जाती है। प्रारम्भिक काल से ही सर्प ने मानव जाति पर अपना सिक्का जमा रक्खा है जिस के फलस्वरूप धर्म भीरू हिन्दुओं ने तो उसकी पूजा का भी एक विशेष दिन नियत कर दिया है। प्राचीन साहित्य में भी तक्षक वासुकि आदि सर्प सम्राटों के चिचित्र कारना मे देखने को मिलते हैं। साँपों के उस भयानक स्थान नागलोक का पता आज तक नहीं है:—उसका

अस्तित्व भी कहीं है या नहीं यह भी नहीं मालूम।

प्लेग और हैज़ा कभी २ और कहीं २ अपना ताण्डव दिखलाते हैं किन्तु इन सर्प देवताओं ने तो सर्वत्र ही अपना अखण्ड साम्राज्य बना रक्खा है। प्लेग के आने की सूचना मिलती है हैजा भी बिना सिगनल के नहीं आता लेकिन ये तक्षक की सन्तान तो बिना किसी सूचना और अपराध के ही तशरीफ ले आते और डंक मारके चम्पत हो जाते हैं।

मनुष्य जाति ने अभी तक अपने इस घर के दुश्मन आस्तीन के साँप से छुटकारा नहीं पाया है। सैकड़ों—हजारों वर्षों से सताई हुई मनुष्य जाति अपने विज्ञान से इसको नेस्तनाबूद नहीं कर सकी है और न इस में सफलता की आशाही रखती है।

साधारणतः सविप और निर्विप के भेद से साँप दो तरह के होते हैं। साँपों का सविप और निर्विप होना—किसी देश की भौगोलिक स्थिति से भी सम्बन्ध रखता है। सर्प शास्त्रियों का विश्वास है कि साँपों का निवास प्रायः गर्म देश में होता है ठंडे देश में होने वाले साँप प्रायः निर्विष होते हैं—जल में रहने वाले जलचर साँप सविप होते हैं।

हिन्दुस्तान की तरह आस्ट्रेलिया में भी विपधर साँपों की अधिकता है। मैडागास्कर टापू में साँपों की सब से अधिक संख्या है—जातियाँ भी कई हैं, मगर सब के सब साँप निर्विप होते हैं। हिन्दुस्तान में साँपों की ३ जातियाँ होती हैं ऐसा सर्प

शास्त्रियों का विश्वास है। जल चर सांपों को छोड़ कर स्थल वासी साँपों की ४० जातियाँ ऐसी होती हैं जो विषधर हैं। आज कल मामूली तौर से पाये जाने वाले सांपों में दो तरह के काले साँप, बारह प्रकार के करैत, और सात प्रकार के भूरे साँप होते हैं।

काले साँपों में एक जाति बहुत विशाल और भयानक होती है इसे सर्पराज कहते हैं।

बम्बई के अजायब घर में १५ फुट ५ इञ्च का एक सर्प राज आज भी मौजूद है। बिना छेड़े ही ये सर्पराज आक्रमण करते हैं खास तौर से इनकी मादी का आक्रमण तो बहुत ही भयानक होता है। अण्डे देने के समय यह सर्प सम्राज्ञी इतनी हिंसक हो जाती है कि जरा सी आहट होते ही काटने को दौड़ती है। कुपित होने पर इस सर्प सम्राट का तना हुआ शरीर मनुष्य के इतना ऊंचा हो जाता है। सौभाग्य से मनुष्यों की बस्तियों में इन सर्प सम्राट का निवास नहीं होता। घने जंगलों की कठिन वन स्थली ही इनकी विहार भूमि होती है। इनका खाद्य पदार्थ इनके सजातीय ही हैं।

इस तरह के काले साँप प्रायः सभी जगह पाये जाते हैं इन्हें वास्तु सर्प भी कहते हैं।

हिन्दुओं में काले साँप को गृह देवता मानने की प्रथा अब भी मौजूद है और प्रायः बिना छेड़े ये किसी को काटते भी नहीं हैं। किसी के फन पर कुण्डलकार घेरा होता है जिसे गोखुर

कहते हैं। किसी के फन पर यह घेरा कुछ लम्बा होता है किसी में होता ही नहीं। इनकी नागिन शीतकाल में अण्डे देती है—दो मास में बच्चे निकल आते हैं—उस समय बच्चों की लम्बाई ८ इञ्च होती है। कुपित होने के बाद इस सर्प का फन बहुत फैल जाता है और यह उससे कड़ा आघात करता रहता है।

करेत जाति के साँपों का रंग कुछ भूरा होता है, इन के शरीर पर थोड़ी २ दूर पर छल्ले से बने रहते हैं। यह साँप भी बस्तियों में ही रहता है और सविष है। यही मनुष्यों को अधिक काटता है और कभी २ बिना छेड़े भी आक्रमण कर बैठता है। छेड़े जाने पर तो यह कतई रियायत नहीं करता छेड़ने वाले को काट कर ही दम लेता है। यह दौड़ता भी खूब है।

धामन जाति के सांप बहुत कम देखने में आते हैं, वे छिपे ही पड़े रहते हैं। खेतों में कभी २ इनके दर्शन होते हैं मनुष्यों की हानि इनसे बहुत कम होती है।

भूरे सांप बहुत अधिक पाये जाते हैं। ये कुछ काहिल होते हैं। भागते कम हैं। इनके कई उपभेद हैं, एक जाति के शरीर पर जगह २ चट्टे से होते हैं, पर शिर पर कोई विशेष चिन्ह नहीं होता। एक और जाति के सिर पर त्रिशूल या बांस के फल के जैसा चिन्ह होता है। यह साँप अपने शरीर की कुण्डली बना कर बैठ जाता है और शरीर की कुण्डलियों को आपस में इस जोर से रगड़ता है कि रगड़ के कारण अपूर्व ध्वनि निकलती है।

साधारणतः सभी सांप एकान्त स्थान में रहना पसन्द करते हैं—भूख लगने पर शिकार की खोज में, ये बस्ती में तशरीफ़ लाते हैं। रीढ़ की हड्डी की हरकत से साँप बहुत तेज चलता है। अच्छे से अच्छा दौड़ने वाला मनुष्य भी छेड़े हुए साँप के आक्रमण से नहीं बच सकता।

सर्प शास्त्रियों का विश्वास है कि सर्प अपने छेड़ने वाले मनुष्य को कभी क्षमा नहीं करता। यह एक आश्चर्य्य जनक बात है कि आज जिस मनुष्य ने जिस सर्प को सताया है, वह सर्प एक महीने बाद भी उसी मनुष्य को काटता है। इसका कारण यह बताया जाता है कि साँप की आंखों में आक्रमणकारी की प्रतिमूर्ति खिंच जाती है जिससे वह उसी मनुष्य को काटता है। यह भी होता है कि सर्प के मारने वाले मनुष्य की मूर्ति को सांप की आँखों में देख कर उसके सजातीय सर्प उसी मनुष्य को काटते हैं इसी लिये मारने के बाद साँप को जला दिया या गाड़ दिया जाता है।

काटने के बाद स्वयं सांप भी अशक्त हो जाता है और नजदीक के किसी गुप्त स्थान में बैठ कर अपनी थकावट दूर करता है। विषैले सांपों के विष दन्त तोड़ने के बाद उनका जीवन काल बहुत कम होजाता है।

हिन्दुस्तान में पाये जाने वाले सांपो के सम्बन्ध में जो जो अन्वेषण हुए हैं उनका संक्षिप्त सार यह है।

हिन्दुस्तान में पाये जाने वाले विषैले सांपों की ५ जातिय

हैं जिनकी अलग २ पहिचान है।

१ समुद्री सर्प

२ करैत Krait

३ काला सांप या नाग Cobra और मूंगा सर्प Coral snake

४ गड्ढेदार वाइपर Viper with pit

५ विना गड्ढेदार वाइपर pitelss Viper

समुद्री सर्प की पूंछ दांयें और बांयें चपटी होती है और उसकी थूंथन और खोपड़ी पर बड़े २ प्लेट होते हैं। समुद्र में रहने वाला प्रत्येक सर्प विषैला होता है । स्थलवासी काले सर्प की अपेक्षा समुद्री सर्प में अठगुना विष होता है।

करैत सर्प की पूँछ गोल होती है रीढ़ के ऊपर ठीक बीच वाली पंक्ति में औरों की अपेक्षा बड़े स्केल होते हैं। करैत में प्रायः नाकवाला स्केल ऊपरी होठ के पहिले और दूसरे स्केल को छूता होता है। नाक और आंख के मध्य में केवल दो स्केल होते हैं। कनपटी वाला एक स्केल ऊपरी होठ के पांचवें और छठे स्केल से छूता हुआ होता है। ऊपरी होठ पर कुल सात स्केल होते हैं जिनमें तीसरा और चौथा आंख से छूता है । नीचले होठ पर चार स्केल होते हैं। गुदा पथ पर एक स्केल होता है। पूंछ के नीचे प्लेट की तरह स्केलों की पंक्ति होती है। प्रायः करैत सर्प लम्बे होते हैं जिनकी लम्बाई ७ फुट या अधिक होती है। संयुक्त प्रान्त में ये बहुत मिलते हैं और यहां वाले इन्हें चित्त कौड़िया कहते हैं।

नाग और मूंगा सर्प की पूंछ गोल होती है होठ के ऊपर वाला तीसरा स्केल आंख और नाक के स्केल को छूता है। यह चिन्ह इसकी खास पहिचान है। इसकी पूँछ के नीचे और गुदा पथ के पीछे स्केल की दो पंक्तियां होती हैं। काले सर्प का फन चौड़ा होता है। इसके फन के ऊपर विष्णु पद होता है। इसके विष की थैली में १० मनुष्यों को मारने लायक विष होता है। नागराज King Kobra भी इसी जाति का सर्प है जो १२॥ फुट तक लम्बा होता है।

करैत सर्प प्रायः पर्वतों पर ही मिलता है इसके पेट पर तरह २ की सुन्दर और रंगीन धारिया होती हैं।

गढ्डे दार वाइपर की पूँछ गोल होती है तथा आंख और नाक के बीच में दोनों तरफ गड्ढा होता है। रीढ़ के ऊपरी स्केल औरों से बड़े नहीं होते। यह प्रायः लम्बा होता है और पर्वतीय स्थानों में मिलता है। इसका विष हमेशा घातक नहीं होता, हां, दंश स्थान पर जोरों की पीड़ा और सूजन होती है। एक तरह का हरे रंग का चमकीला सर्प वृक्षों पर ही रहता है जिसकी लम्बाई ३ फुट होती है। अमेरिका में पाए जाने वाले एक सर्प की पूंछ के सिरे पर छोटी २ घंटियों के आकार के आकार के स्केल होते हैं आपस में सम्बन्ध होने के कारण सर्प के चलने पर इनकी एक विशेष आवाज भी निकलती है। बहुधा यह सर्प मनुष्यों पर आक्रमण नहीं करता, पशु अवश्य इससे डरते रहते हैं।

विना गड्ढेदार वाइपर की पूँछ गोल होती है तथा थूंथन और सर के ऊपर छोटे २ स्केल होते हैं यह सर्प रेगिस्तानों में मिलते हैं। राजस्थान, सिन्ध, आदि स्थानों में ये बहुत हैं और इनका विष साधारणतः घातक होता है। इनकी लम्बाई २ फुट से अधिक नहीं होती।

सांपों के ऊपर ऋतुओं का प्रभाव होता है। गर्मी के दिनों में—धूप की तेजी की वजह से सांपों की प्रकृति अत्यन्त कुपित हो जाती और वह गुस्से में भरे रहते हैं। बरसात के दिनों में उनके निवास स्थान में पानीकीचड़ होने से उन्हें गुस्सा आता रहता है।—यही वजह होती है कि रहने की असुविधा के कारण ही बरसात के दिनों में सांप इधर उधर घूमते रहते हैं और काटते रहते है। ठंड के दिनों में सांपों की शक्ति कम हो जाती है। और अपने स्थान में ही छिपे पड़े रहते हैं। सांप पकड़ने वाले सपेरे शीत काल में ही साँपों को पकड़ते हैं। सांपों से खेलने वाये सपेरे साँप का विषदन्त तोड़ के ही उसे अपने पास रखते हैं। अन्यथा विषैले सर्प का किसी के आधीन रहना सर्वथा असम्भव है। विषैले सांप के मुंह में ६ विषदन्त होते हैं। जो २ ऊपर और चार नीचे हैं। ऊपर की दशनपंक्ति के २ दांत बड़े और नीचे की पंक्ति के ४ दाँत छोटे होते हैं। कभी कभी भूल से जब कोई विषदन्त नहीं तोड़ा जाता या जो सपेरे विपदन्त तोड़े विना ही तमाशा करते हैं तो समय मिलने पर तत्काल साँप काट लेता है।

सांपों की सुगन्धि और संगीत प्रियता

दिल प्रसन्न करने वाली सुगन्धि सांपों को बहुत प्रिय होती है। सुगन्धित वृक्षों के आस पास साँप मस्त होके पड़े रहते हैं। चन्दन की सुगन्धी इन्हें इतनी अधिक प्रिय है कि उसके वृक्ष के चारों तरफ ये लिपटे पड़े रहते है। हां तेज गन्ध से इनका नाक सिकुड़ने लगता है और वहां ये टिकते भी नहीं। नाटट्रिकसिड टिंचरआइडिन फिनाइल कार्बोलिक ऐसिड आदि उग्रगन्ध औषधियों के पास ये नहीं आते—दूरसे ही प्रणाम करके चले जाते हैं। दुर्गन्धित स्थान भी इन्हें बहुत अप्रिय होते हैं।

सुगन्धि की तरह संगीत भी इनके मनोरंजन की चीज है। संगीत की मधुर ध्वनि पर साँप बुरी तरह लट्टू हो जाता और अपने निवास को छोड़ कर संगीत के पास आ बैठता है। यह देखा गया है कि हारमोनियम मृदंग और शारंगी की मीठी तान पर सांप मुग्ध होकर पास में आ बैठता है।—कर्णकटु संगीत सांपों के लिये रुचिकर नहीं होता ढोल ढमाके की आवाज से तो सांप उल्टा दूर हट जाता है।

दर्वीकर—फण वाले सांप

फण वाले सांपों कोदर्वी कर कहते है। इनका मुंह करछली के जैसा होता है इसलिये इन्हें दर्वीकर कहते हैं। दर्वीकर सांप की चाल बहुत तेज होती है कैसे से कैसा तेज दौड़ने वाला दुश्मन

भी दर्वीकर सांप के मुंह से नहीं बच सकता। दर्वीकर साँपों के शरीर पर रथ के पहिये का हल का अंकुशका या स्वस्तिक का निशान होता है। इन निशानों से इनकी पहिचान होती है।

आयुर्वेद में दर्वीकर सांपों के २३ भेद माने गये हैं।

(१) कृष्ण सर्प (२) महाकृष्ण (३) कृष्णोदर (४) श्वेत कपोत, (५) महा कपोत (६) वलाहक (७) महासर्प (८) शंखपाल (९) लोहिताक्ष (१०) गवेधुक (११) परिसर्प (१२)खण्ड फण (१३) कुमुद पद्म (१४) महापद्म (१५) दर्भ पुष्प (१६) दधिमुख (१७) पुण्डरीक (१८) भ्रकुटि मुख (१९) विष्करि मुख (२०) पुष्पाभिकीर्ण (२१) गिरि सर्प (२२) ऋजुसर्प (२३) श्वेतोदर (२४) महाशिरा (२५) अलगर्द और (२६) आशी विष।

नामों के अनुसार ही इन सर्पों का स्वरूप होता है।

मण्डलि—चितकबरे सांप

—:※:—

मण्डल (चित्तियां) होने के कारण इन्हें मण्डलि सर्प कहते हैं। शुद्ध हिन्दी में चितकबरे साँप का नाम ही मण्डलि सर्प है। मण्डलि सर्पों के शरीर पर कई तरह की चित्तियां होती हैं। किसी के शरीर पर सफेद, किसी के लाल, किसी के काली और किसी के शरीर पर पीली चित्तियां होती हैं मंडली सर्प मन्दगामी होता है। धीरे २ चलता है इसलिये यह सहज ही मारा और

पकड़ा जा सकता है। मण्डलि सर्प का मध्यभाग तो होता है मोटा, और आदि अन्त का हिस्सा होता है पतला इनकी प्रकृति में पित्त की अधिकता होती है, इसलिये इनका शरीर खासकर आंखें आग की तरह प्रदीप्त रहती हैं।

आयुर्वेद में मण्डलि सर्प २६ तरह के होते हैं।

(१) आदर्श मण्डल (२) श्वेत मण्डल (३) रक्त मंडल (४) चित्र मण्डल (५) पृपत (६) रोध्रपुष्प (७) मलिंदक (८) गोनस (९) वृद्धगोनस (१०) पनस (११) महापनस (१२) वेणुपत्रक (१३) शिशुक (१३) मदन (१५) पालिन्दिर (२६) पिंगलतन्तुक (१७) पुष्प पाण्डु (१८) पडंग (१९) अग्निक (२०) बभ्रु (२१) कपाय (२२) कलुप (२३) पारावत (२४) हस्ता भरण (२५) चित्रक और (२६) ऐणीपद।

राजिमन्त—धारीदार सर्प
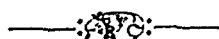
राजि नाम धारी का है इसलिए धारीदार साँपों को राजिमन्त सांप कहा गया है। तिरछी, सीधी, टेढ़ी, कई तरह की धारियां इनके शरीर पर होती हैं धारियों का रंग भी कई तरह का होता है। किसी के शरीर पर लाल धारी होती है, किसी के काली, और किसी के सफेद। इनका शरीर बड़ा ही कोमल होता है।

इनके १२ भेद माने गये हैं

(१) पुण्डरीक (२) राजिचित्र (३) अंगुलराजि (४) विन्दुराजि (५) कर्दमक (६) तृणशोषक (७) सर्पपक (८) श्वेत हनु (९) दर्भपुष्प (१०) चक्रक (११) गोधूमक और (१२) किकिसाद

व्यन्तर—दोगले सांप

भाकुलि, पोटगल, स्निग्धराजि, दिव्यैलक, रोध्रपुष्पक, राजिचित्रक, पुष्पाभिकीर्ण दर्भपुष्प, वोल्लिक, इस तरह दोगले सांप भी १० तरह के माने गये हैं। भिन्न प्रकृति का सांप, भिन्न प्रकृति की सांपिन से जब सहवास करता है तो दोगला सांप पैदा होता है। फणवाला सांप, जब चितकबरी सर्पिणीसे संभोग करेगा तो उससे वात पित प्रकृति वाला दोगला सांपपैदा होगा। राजिल सर्पिणी जब फणी साँप से सहवास करेगी तो उससे वात कफ प्रकृति वाला साँप पैदा होगा, इसी तरह मण्डली सर्प जब राजिल सर्पिणी के साथ सहवास करेगा, तो पित्त कफ प्रकृति वाला दोगला पैदा होगा।

दोगले साँप का विष अपेक्षा कृत भयानक होता है चूंकि उसके विष में दो दोषों की प्रधानता होती है। उसके प्रकृत दोषों के हिसाब से ही विष के विकार पैदा होंगे। दर्वीकर—मण्डलि संभोग से उत्पन्न सर्प के विष विकार में वात पित्त की प्रधानता रहेगी, और दोनों सर्पों के मिश्रित लक्षण प्रकट होंगे। दर्वीकर

राजिल संभोग से उत्पन्न सर्प विष के विकारों में वात कफ प्रधानता के विप लक्षण प्रकट होंगे। इसी तरह मण्डलि राजिल संभोग से उत्पन्न सर्प के विष में पित्त कफ की प्रधानता के विष लक्षण होंगे।

निर्विप—अल्प विष सर्प

सभी सांप जहरीले नहीं होते—पानी में रहने वाला जल सर्प प्रथम तो काटता ही नहीं और काटता भी है तो इसका विप बहुत कम असर दिखलाता है। दो मुंह वाला दुमुही सर्प कभी नहीं काटता—पैरों में लिपट अलबत्ता जाता है लेकिन काटता नहीं विप वाले—जहरीले सांप भी परिस्थितियों को वजह से कभी-कभी निर्विप हो जाते हैं। उन परिस्थितियों का जिक्र वाग्भट्ट ने किया है

जलालुप्ता—रतिक्षीणाः भीता नकुल निर्जिताः।
शीत वातातप व्याधि—क्षुत्तृष्णाश्रम निपीड़िता॥
तूर्णं देशान्तरायाता—विमुक्त विप कंचुका।
कुशौपधी कण्टक वद्ये—चरन्तीव काननम्॥
देशं च दिव्याध्युपितं—सर्पास्तेऽल्प विषामताः।

पानी में रहने वाला सर्प अल्पविप होता है। सहवास के बाद भयानक सर्प का विप भी थोड़ा असर दिखलाता है किसी कारण से डरे हुए और न्योले से सताए हुए सर्प का जहर कम

प्रभाव दिखलाता है। ठंड, हवा, धूप, व्याधि, भूख, प्यास और परिश्रम से पीड़ित सर्प का दंश खतरनाक नहीं होता। यात्रा से थके हुए और केंचुली छोड़े हुये सर्प का विष घातक नहीं होता कुशा जैसी कांटेदार जगह में घूमने वाला सांप अल्प विष होता है तपोनिष्ठ महात्मा के आश्रम में रहने वाले सांप का विष महात्म के तपः प्रभाव से, अपने प्रभाव को छोड़ देता है।

उपरोक्त कारणों की वजह से सांप के विष की मात्रा में कमी हो जाती है ऐसी दशा में या तो सांप काटता ही नहीं और संयोग वश यदि काट भी लेता है तो उसका असर बहुत कम होता है।

सांप से बचने के उपाय
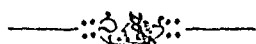
साँप क्यों काटता है, इसका जिक्र अलग किया गया है। बिना कारण साँप नहीं काटता, और साँप होने पर ही कोई कारण बन सकता है इस लिये सांप से दूर ही रहना उत्तम है। सावधानी इस बात की रखनी चाहिए कि सांप से सामना ही न हो। न रहेगा बाँस और न बजेगी बांसुरी इस लिये साँप से बचने का ही उपाय करना चाहिए।

साँप अपना कोई निवास स्थान नहीं रखते। वे चूहे आदि के बिलों में घुस के ही अपना निर्वाह कर लेते हैं, मजा यह है कि जिसके स्थान में आराम करते हैं उसी को अपना

भोजन भी बना लेते हैं । मकान के छप्परों में भी कभी २ साँप छिप जाते हैं कभी २ शिकार की खोज में घरों में भी तशरीफ ले आते हैं और किसी सुरक्षित स्थान में अपनी सीट रिजर्व कर लेते हैं । घरों में बहुधा खपरैल की छत में छिपे रहते हैं । या कपड़े की छत पर विराज जाते हैं । लम्बी घास या ईंट पत्थरों के ढेर में भी सर्प देवता का निवास हो जाता है । घरों में घुसने के लिए प्रायः मोरियां ही इनके काम आती हैं । और दिनों की अपेक्षा बरसात के दिनों में नाग देवता के अधिक दर्शन होते हैं इसका कारण यह होता है कि रहने के स्थानों, बिल वगहर में पानी घुस जाने से इन्हें स्थान छोड़ देना पड़ता है जिससे गुस्से में भर कर बाहर निकलते हैं ।

इस दुशमन से बचने के ये उपाय हैं—

निवास स्थान के आस पास ईंट पत्थर का ढेर नहीं रखना चाहिए घरों में चूहे के बिल नहीं होने चाहिए । सोने का स्थान जमीन से ऊँचा रखना चाहिये । मोरियों पर जाली लगवा देनी चाहिये । संदिग्ध स्थानों में मोजा और बूट पहिन के जाना चाहिए ।

घर में न्योला जरूर रखना चाहिए । बिल्ली भी सांप की दुश्मन होती है कुत्ते को सांप की गन्ध आजाती है जिससे वह भौंकने लगता है ।

तेज गन्धों से सांप भाग जाते हैं इस लिये मकानों में फिनाइल छिड़कनी चाहिए । संदिग्ध स्थान में आइडोफार्म, कार्बोलिक एसिड आदि चीजों के रखने से सांप बाहर निकल आता है।

द्वितीय परिच्छेद

—:※:—

साँप क्यों काटता है ?

प्राय: सभी जगह साँप रहते हैं और आदमियों का निवास भी वहाँ रहता है। एक जगह साँप वठा हुआ है, उस रास्ते से बहुत से मनुष्य जाते हैं, मगर वह उनमें से किसी एक को ही काटता है, सब को नहीं काट लेता। किसी घर में रहने वाला साँप घर के सभी आदमियों को न काट के किसी खास आदमी को ही काटता है। ऐसी दशा में यह प्रश्न अवश्य उठता है कि उस खास आदमी को ही साँप ने क्यों काटा—और वह काटता ही क्यों हैं ? विना किसी वजह के क्यों यह किसी की जान लेने का प्रयत्न करता है ?

जब साँप को भूख लगती है और उसका खाद्य पदार्थ उसे नहीं मिलता है तो नजदीक के मनुष्य को काट लेता है। किसी कारण सें साँप डरा हुआ हो और कोई सामने मिल जाय तो वह काट लेगा। संयोग वश पैर से दब जाने पर सांप काट लेता है। विष ज्यादा हो जाने पर सांप मस्त हो जाता है और काट लेता है। किसी ने सांप को छेड़ छाड़ कर कुपित कर दिया है तो गुस्से में भर कर वह काटता है। पूर्व जन्म का कोई वैर हो, तो दुश्मनी चुकाने के लिये—अपने वैरी को सांप काट लेता है। देवता—ऋषि और यमराज के आदेश से भी साँप काटता है।

सांप काटने में ये ६ कारण हैं—

१ सांप को भूख लगने पर वह काट लेता है।
२ डर से सांप काटता है।
३ पैर से दब जाना।
४ विष अधिक हो जाना।
५ कुपित हो जाना।
६ पूर्व जन्म का कोई वैर।
७ देवता का अभिशाप।
८ ऋषि का शाप।
९ यमराज का मृत्यु आदेश।

एक खास बात इन कारणों में यह भी है, कि अनुक्रम से पहिले कारण से दूसरे कारण और दूसरे से तीसरे का विष अधिक भयानक होता है।

७ वें–८ वें–और ९ वें–कारण से काटे हुये सांप के रोगी का कोई इलाज नहीं है। ८ वें कारण का एक दृष्टान्त राजा परीक्षित भी है—जिसे ऋषि के शाप से तक्षक नाग ने काटा था।

सर्प दंशन Snake Bite

सर्प दंशन—सांप के काटने को, भारतीय आयुर्वेद ने चार भागों में विभक्त किया है।

(१) सर्पित, (२) रदित (३) निर्विष और (४) सर्पाङ्गाभिहत, ये चार भेद हैं। प्रत्येक का अलग २ स्वरूप होता है।

सर्पित दंश

सर्पित दंश के मानी है—खूब अच्छी तरह काटा हुआ काटे हुये स्थान पर एक-दो या तीन चार दांतों के निशान गड़े हुए मालूम पड़ते हैं। खून भी थोड़ा सा निकलता है। काटे हुए स्थान पर सूजन के साथ वटांकुरजैसी छोटी २ फुन्सियां भी हो जाती हैं। साथ ही विष का असर बड़ी जल्दी होने लगता है। विकार पैदा होने में विलम्ब नहीं होता।

पदानि यत्र दन्तानामेकं—द्वे वा बहूनि च।
निमग्नान्यल्प रक्तानि—यान्युद्धृत्य करोति हि॥
चञ्चुमालक युक्तानि—वैकृत्य करणानि च।
संक्षिप्तानि सशोफानि—विद्यात्तन्सर्पितं भिषक्॥

(सुश्रुत

सर्पित दंश में विष का पूरा प्रवेश हो जाता और ... विकार भी तत्काल प्रकट होने लगते हैं, इस लिए रोगी बचना बड़ा कठिन होता है, खास कर उस दशा में जब कि ... द्वार उपचारक उसके पास न हो। तत्काल ही यदि विपन्न उपचार किये जायें तो रोगी के बचने की सम्भावना ... अन्यथा विलम्ब होने पर विष का प्रभाव हृदय तक पहुंच ... है—जो रोगी के लिए घातक होता है।

रदित दंश

इसे हल्का दंश कह सकते हैं। काटे हुए स्थान पर नीली या सफेद लकीरें दिखलाई देती है कभी २ ये लकीरें लाल और पीले रंग की भी होती हैं।

राज्यः सलोहिता यत्र नीलाः पीताः सितास्थता।
विज्ञेयं रदितं त्वत्तु ज्ञेयमल्पविषञ्चतत्॥ (सुश्रुत)

रदित दंश में विष का अल्प प्रवेश होता है, इस लिए इसे अल्प विष भी कहते हैं। रदित दंश का रोगी प्रारम्भ से ही असाध्य नहीं होता तात्कालिक उपचारों से रोगी की दशा ठीक हो सकती है किन्तु विलम्ब होने पर थोड़ा विष भी मारक हो जाता है।

निर्विष दंश

सभी साँप जहरीले नहीं होते यह पहले कहा जा चुका है। कभी २ विषधारी सांपों का दंशन भी विष रहित होता है। जब साँप ने काटा तो जरूर हो, काटने के फलस्वरूप दाँतों के निशान भी हों, दंश स्थान से कुछ खराब खून भी निकला हो, लेकिन यदि काटे हुए स्थान पर सूजन न हो और मनुष्य की दशा एक दम ठीक हो—किसी इन्द्रिय में कोई विकार पैदा न हुआ हो तो समझ लेनां चाहिए कि यह निर्विष दंश है—

अशोफ मल्प दुष्टास्त्रक् प्रकृवि स्थस्य देहिनः।
पदं पदानि वा विद्या दनिषं तच्चिकित्सकः॥
(सुश्रुत)

निर्विष दंश में मनुष्य के शरीर में कोई खरावी नहीं हो सकती लेकिन सर्प दंश के नाम के डरके विकार हो सकते हैं। सर्पदंश का नाम मनुष्य को एक दम डरा देता है इस लिये रोगी को शान्ति के साथ समझा देना चाहिए। डर के मारे बेहोशी आके रोगी बेहोश हो जाता है इस लिये इस डर को निकाल देना चाहिये।

सर्पाङ्गाभिहत

—:❀:—

सर्पाङ्गाभिहत के मानी है सांप के शरीर से छू जाना—रगड़ लग जाना। हैजे और प्लेग के दिनों में जैसे कमजोर दिल वाले मनुष्य अपने आप बीमार होके मर जाते है—उसी तरह सर्पाङ्गाभिहत रोगी भी अपने डरे हुए मन की कल्पना से अपनी दशा को बिगाड़ लेता है। कभी २ ऐसा होता है कि किसी मनुष्य का कोई अङ्ग सांप के शरीर से छू जाता है। इस छू जाने मात्र से ही मनुष्य के दिमाग में सांप के काटने का हौवा घुस जाता है और वह अपनी कल्पना से स्वयं ही अपनी दशा बिगाड़ लेता है।

सुश्रुत में लिखा है—

सर्पस्पृष्टस्य भीरोर्हि—भयेन कुपितोऽनिलः ।
कस्य चित् कुरुते शोफं—सर्पाङ्गाभिहतन्तु तत् ॥

यानि डरपोक मनुष्य जब सांप से छू जाता है तो डरके मारे उसका शरीरस्थ-वायु विगड़ जाता और छू ही हुई जगह पर सूजन पैदा कर देता है।

निर्विप दंश वाले की तरह इस रोगी को भी समझा बुझा के तसल्ली देनी चाहिए ताकि उसका डर निकल जाय।

ऐसी दशा में सब से आसान तरकीब यह है कि रोगी को विश्वास दिलाने के लिये नीम के पत्ते खिलाए जायें। यह सभी जानते हैं कि सांप काटने पर नीम के पत्ते कड़ुए नहीं मालूम होते इस लिये जब रोगी पत्ते खायेगा तो स्वयं ही अपने आपको अच्छा समझ लेगा।

दर्वीकर, मण्डलि और राजिमन्त सर्पों का जिक्र पहिले हो चुका हैं, क्रमशः इनमें वात पित्त और कफ की प्रधानता रहती है। दर्वीकर साँप की प्रकृति वात प्रधान, मण्डलि की पित्त प्रधान और राजिमन्त की कफ प्रधान होती है दंशन के बाद इनकी प्रकृति के अनुसार ही दंश चिन्ह और विकार पैदा होते हैं। अभ्यासी सर्प विष चिकित्सक काटी हुई जगह को देख कर ही यह बतला सकता है कि इसे किस सर्प ने काटा है। अच्छे चिकित्सक के लिए यह भी आवश्यक होता है कि चिकित्सा से पहिले वह सर्प की प्रकृति को भी जान ले।

दर्वीकर के दंश चिन्ह और उसके विकार

—:❀::❀:—

दर्वीकर—फण वाला साँप वात प्रधान प्रकृति वाला होता है। इसके काटने पर काटी हुई जगह काली पड़ जाती है खून नहीं निकलता और कछुए की तरह फूल जाती है। वायु के शीघ्र गामी होने की वजह से, दर्वीकर सांप का विष बड़ी जल्दी शरीर में प्रविष्ट होके अपना प्रभाव दिखलाना शुरू कर देता है विष के रक्त में मिलते ही आँख, चमड़ी, नख, और मूत्र-मल का वर्ण काला हो जाता है। जम्हाई शुरू हो जाती है कंप कंपी आती है आवाज मन्दी पड़ जाती है गले में घुर २ की ध्वनि होने लगती है शरीर जकड़ जाता है और रूखा हो जाता है। रूखी डकारों के साथ खाँसी और साँस उठने लगता है, शिर भारी हो जाता जोड़ों में दर्द होने लगता है। कमर पीठ और गरदन की जान सी निकलने लगती है। हाड़ फूटन, शूल प्यास के साथ वायु की गति प्रतिकूल हो जाती है। नाक कान आँख मुँह आदि स्रोतों में रुकावट होने लगती है। मुंह में झाग आने लगते और लार टपकने लगती है।

मण्डलि का दंश चिन्ह और उसके विकार

—:o:—

मण्डलि सर्प की प्रकृति में पित्त की अधिकता रहती है इस लिए इसके द्वारा काटा हुआ स्थान पीले वर्ण का हो जाता

है। पीले रंग के सूजे हुए दंश को देख कर यह समझा जा सकता है कि मण्डलि सर्प ने ही काटा है। पित्त विकृति के सभी चिन्ह प्रकट होने लगते हैं। विष के रक्त में प्रविष्ट होते ही नेत्र मल मूत्र नख दंत आदि का रंग पीला होना शुरू हो जाता है। जलन, प्यास, के साथ वेहोशी होने लगती है। शरीर से भाफ निकलने लगती है। विलम्ब होने पर मुख नाक गुदा और पेशाव के रास्ते खून भी आने लगता है। दंश स्थान में सूजन होके सड़ने लगता है।

राजिल का दंश-और उसके विकार

—:ꕥ:—

राजिल सर्प के स्वभाव में कफ की अधिकता रहती है। इस लिए इसके काटने पर कफ के सभी विकार प्रकट होते हैं। दंश स्थान का रंग हल्की सफेदी लिए हुए होता है· छूने से वह जगह कड़ी और चिकनी मालूम पड़ती है। गाढ़ा और सान्द्र रक्त निकलता है।

कफ की वजह से विष का असर—दर्वीकर और मण्डलि सर्प के विष की अपेक्षा कुछ विलम्ब से होता है। त्वचा मुंह नेत्र मल मूत्र आदि का रंग सफेद पड़ जाता है। ठंड लग के ज्वर हो जाता है रोमाञ्च होके शरीर में जकड़न होती है आँखों में खुजली चलके गले में सूजन हो जाती और घुर घुर की आवाज निकलने लगती है। श्वास लेने में रुकावट होती है और आंखों के आगे अन्धेरा आ जाता है। उल्टी आती है और गाढ़ा कफ निकलता है।

व्यन्तर (दौगले) का दंश और उसके विकार

दोगले सर्प का दंश और उसका विकार—उसकी मिश्रित प्रकृतिके अनुसार होता है। दोगले के दंशमें दो दोषोंकी प्रधानता रहती है—चूँकि वर्ण संकरता के कारण उसका रक्त—भिन्न जाति के दो सर्पों की प्रकृति से पैदा होता है। जिन दो जातियों के संसर्ग से उसकी उत्पत्ति होगी उन्हीं जातियों के मिश्रित विकार पैदा होंगे। फणि मण्डलि संयोग से उत्पन्न सर्प के दंश में वात और पित्तके मिले हुए विकार होंगे इस लिए दंशस्थान काला पन लिए हुए कुछ पीला नजर आयेगा। जम्हाई कप कपी, हाड़ फूटन आदि दर्वीकर सर्प दंश के विकारों के साथ ही ज्वरप्यास मूर्च्छा आदि मण्डलि सर्प दंश के विकार भी साथ में होने लगते हैं।

दर्वीकर-राजिल संसर्ग से उत्पन्न दोगले का दंश—दोनों सर्पों के मिश्रित विकार युक्त होता है और दोनों के मिले हुए लक्षण प्रकट होते हैं। वात और कफ दोनों के मिले हुए विकारों को देख कर सर्प की प्रकृति की पहिचान हो सकती है।

इसी तरह मण्डलि और राजिल संसर्ग से उत्पन्न सर्प के दंश में कफ और पित्त के मिले हुये विकार एक साथ पैदा होने लगते हैं।

भिन्न प्रकृति की वजह से दोगले सर्प दंश की चिकित्सा में बड़ी दिक्कत पड़ती है सहज ही में ज्ञान नहीं होता विरुद्ध चिकि-

रना हुई या विलम्ब हुआ तो रोगी खतम ही समझिये इस में सामान्य चिकित्सा करनी चाहिए।

मण्डली सर्प विष के सात वेग

१ ला वेग

"प्रथमे वेगे विषं शोणितं दूषयति, तत्तत्र प्रदुष्टं शीतता मुपैति, तत्र परिदाहः पीतावभासता चाङ्गानां भवति"

पहले वेग में विष खून को बिगाड़ देता है जिससे खून ठंडा पड़ जाता है। बाद में सारे शरीर में पीलेपन की झलक होने लगती है और दाह होता है।

२ रा वेग

'द्वितीये मांसं दूषयति, तेनात्यर्थं पीतता परिदाहो दंशे श्वयथुश्चभवति।"

दूसरे वेग में विष मांस को दूषित कर देता है। शरीर एक दम पीला हो जाता और बड़े जोरों से जलन होने लगती है दंश स्थान में सूजन हो जाती है।

३ रा वेग

तृतीये मेदो दूषयति। तेन पूर्व वचक्षु ग्रहणं तृष्णा दंशे क्लेदः स्वेदश्च।

तीसरे वेग में मेद खराब हो जाती है जिसमें आंखें पथरा जाती, प्यास लगती और दंश स्थान में क्लेद और पसीना आने लगता है।

४ था वेग

चतुर्थे कोष्ठ मनु प्रविश्य ज्वर मापादयति।

चौथे वेग में विष कोठे में प्रविष्ट होके तीव्र ज्वर को पैदा कर देता है।

५ वां वेग

पंचमे परिदाहं सर्व गात्रेषु करोति।

पाँचवें वेग में विष की तेजी गर्म से सारा शरीर जलने लगता है।

६ ठे वेग

दर्वी करवत्।

छठे वेग में दर्वीकर सांप के वेग की तरह विष मज्जा में प्रविष्ट होके ग्रहणी को दूषित कर देता है। अंगों में भारीपन, दस्त, हृदय पीड़ा और मूर्च्छा होने लगती है।

७ वाँ वेग

दर्वीकरवत्

सातवें में विष शुक्र में घुस कर व्यान वायु को बिगाड़ देता है। शरीर के सूक्ष्म छिद्रों से स्राव होने लगता मुंह से कफ की बत्तियाँ गिरने लगती कमर और पीठ में दर्द होने लगता चेष्टाओं का विनाश, लार और पसीने का अत्यन्त गिरना, तथा श्वास रुक के प्राणान्त हो जाता है।

दर्वीकर सर्प विष के सात वेग

१ ला वेग

तत्र दर्वी कराणां प्रथमे वेगे, विषं शोणितं दूषयति। तत् प्रदुष्टं कृष्णता मुपैति, तेन कार्ष्ण्यं पीपिलिका परिसर्पण मिव चाङ्गे भवति। (सुश्रुत)

दर्वीकर साँप के काटने से विष खून में प्रविष्ट होके उसे खराब कर देता है जिससे रक्त काला हो जाता है। शरीर के अङ्ग—नख नेत्र आदि काले होने लगते हैं और ऐसा मालूम होने लगता है, मानो शरीर के अन्दर चीटियां चल रही हों। यह पहिला वेग होता है।

२ रा वेग

द्वितीये मांसं दूषयति तेना त्यर्थं कृष्णता शोफो ग्रन्थय श्चांगे भवन्ति। (सुश्रुत)

खून को बिगाड़ के विष मांस को खराब करता है जिससे शरीर एक दम काला पड़ जाता है। सूजन हो जाती है और गांठें पैदा हो जाती हैं। यह दूसरा वेग होता है।

३ रा वेग

तृतीये मेदो दूषयति तेन दंश क्लेदः शिरो गौरवं स्वेदश्चक्षु ग्रहणञ्च। (सुश्रुत)

मांस के बाद मेदा दूषित होती है। काटे हुए स्थान में क्लेद, शिर में भारीपन स्वेद और आंखें पथराने लगती हैं।

४ था वेग

चतुर्थे कोष्ठ मनु प्रविश्य कफ प्रधानान्दोपान् दूषयति। तेन तन्द्रा प्रसेक सन्धि विश्लेषा भवन्ति।

(सुश्रुत)

चौथे वेग में विष कोठे में घुस कर कफादि धातुओं को बिगाड़ देता है जिससे रोगी को झेंप आने लगती हैं मुँह से पानी गिरने लगता है और जोड़ों में पीड़ा होती है।

५ वां वेग

पञ्चमेऽस्थीन्यनु प्रविशति प्राण मग्निञ्च दूषयति। तेन पर्व भेदो हिक्का दाह श्चभवति।

पांचवें वेग में विष हड्डियां में घुस जाता है जिससे प्राण वायु और अग्नि दूषित होती है। हाड़ फूटन, हिचकी और दाह होने लगता है।

६ ठा वेग

षष्ठे मज्जानमनु प्रविशति ग्रहणीञ्चात्यर्थं दूषयति। तेन गात्राणां गौरवम तीसारो हृत्पीड़ा मूर्च्छा च भवति।

छठे वेग में विष मज्जा में प्रवेश करता और पित्तधरा कला (ग्रहणी) को दूषित कर देता है। जिससे अंगों में भारी पन होने लगता और दस्त लगने लगते हैं। हृदय में पीड़ा होके मूर्च्छा आने लगती है।

७ वां वेग

सप्तमे शुक्र मनु प्रविशति व्यानञ्चात्यर्थं कोपयति, कफञ्च सूक्ष्म स्रोतोभ्यः प्राच्यावयति। तेन श्लेष्मवर्ति प्रादुर्भावः कटी पृष्ट भङ्गश्च सर्व चेष्टा विघातो लाला स्वेदयोरति प्रवृतिरुच्छ्वास निरोधश्च भवति।

सातवें वेग में विष वीर्य में प्रविष्ट होता है। व्यान वायु एक दम कुपित हो जाती है सूक्ष्म स्रोतों से कफ गिरने लगता है श्लेष्मा की वत्तियां गिरने लगती है। कमर और पीठ में दर्द होने लगता और समस्त चेष्टायें मारी जाती हैं। लार और पसीना बहुत निकलता है अन्त में श्वास रुक जाता है।

राजिमन्त सर्प विष के सात वेग

—:*:—

१ ला वेग

राजिमतां प्रथमे वेगे विषं शोणितं दूषयति । तत्प्रदुष्टं पाण्डुता मुपैति । तेन रोम हर्ष शुक्लाव भासश्च पुरुषो भवति ।

राजिमन्त—कफ प्रवृति वाले सर्पों का विष खून में जाकर उसे दूषित करता है जिससे खून का वर्ण पाण्डु हो जाता है। रोमाञ्च हो जाता और रोगी सफेद मालूम पड़ने लगता है।

२ रा वेग

द्वितीये मांसं दूषयति तेन पाण्डुता त्यर्थं जाड्यं शिर शोफ-श्चभवति

दूसरे वेग में विष मांस को दूषित कर देता है रक्त एक-दम पाण्डु हो जाता शिर जकड़ने लगता और सूजन हो जाती है

३ रा वेग

तृतीये मेदो दूषयति तेन चक्षु ग्रहणं दंश क्लेदः स्वेदोऽक्षि-घ्राण स्रावश्च भवति ।

तीसरे वेग में मेद धातु खराब होके आंखें पथराने लगती दंश स्थान में क्लेद स्वेद और आंख नाक का स्राव प्रारंभ हो जाता है।

४ था वेग

चतुर्थे कोष्ठ मनु प्रविश्य मन्या स्तम्भं शिरोगौरवञ्चा-पादयति ।

चौथे वेग में कोठे में घुस कर गरदन को जकड़ देता और शिर को भारी कर देता है।

५ वां वेग

पंचमे वाक्सङ्गं शीत ज्वरञ्च करोति

पांचवें वेग में जबान बन्द हो जाती और शीत लग के बुखार हो जाता है।

६ ठा वेग

पूर्ववत्।

६ ठे वेग में दर्वीकर जैसे लक्षण होते हैं।

७ वां वेग

दर्वीकर जैसी दशा होती है।

सांपों की तीन जातियां

स्त्री पुरुष और नपुंसक के भेद से सांपों की तीन जातियां होती हैं जातियों के अनुसार इनका स्वरूप होता है और जाति के अनुसार ही इनका दंश भी होता है।

(१) पुरुष जाति सर्प।

(२) स्त्री जाति सर्प।

(३) नपुँसक जाति सर्प।

नीचे जाति गत स्वरूप और दंश का उल्लेख किया जाता है।

पुरुष जाति सर्प और उसका दंश

जिस सर्प का शरीर दीर्घायत हो, शिर भारी और बड़ा हो तथा जिसकी आंखें सांस लेने के समय ऊपर की तरफ देखती हों, वह पुरुष जाति सर्प होता । पुरुष जाति सर्प के काटने पर मनुष्य की नजर ऊपर की तरफ हो जाती है नीचे की वस्तुयें उसे नजर नहीं आतीं, साथ ही या तो उसकी आवाज बन्द हो जायगी, या बहुत कम बोल सकेगा। शरीर में कंपकंपी भी जोरों से होने लगती है।

स्त्री जाति सर्प और उसका दंश

—:❀:❀:—
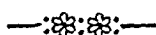
स्त्री जाति सर्प की नजर श्वास लेने के समय नीचे की तरफ होती है उसका शरीर चिपटा हल्का और छोटा होता है, शरीर भी दीर्घायत नहीं होता। इसके काटने के बाद रोगी की नजर नीचे की तरफ हो जाती है ऊपर की चीजें उसे नजर नहीं आतीं आवाज बनी रहती है।

नपुंसक जाति सर्प और उसका दंश

——:o:——

शरीर ढीला हो आवाज मन्दी हो, नजर नीची हो और और स्त्री पुरुष जाति दोनों सर्पों के कोई २ चिन्ह मौजूद हों वह

नपुंसक जाति सर्प होता है। इसके काटने पर रोगी की आंखें टेढ़ी हो जायेंगी यही एक खास पहिचान है।

क्लीवः स्रस्तस्त्वधोदृष्टि स्वरहीनः प्रकम्पते

विष का प्रभाव

शरीर के ऊपर सर्प के विष का तात्कालिक और चामत्कारिक प्रभाव होता है। आयुर्वेद में सर्पविष मिश्रित औषधियों का वर्णन है और इन औषधियों की परीक्षा के बाद यह निश्चय होता है कि सर्प विष जैसी उत्तेजक और चामत्कारिक औषधि अभी तक औषधि संसार में आविष्कृत नहीं हुई है। शीताङ्ग सन्निपात और हैजे की शीताङ्ग दशा में जब रोगी मुमूर्षु दशा में होता है, सर्प विष मिश्रित औषधि की सर्षप मात्रा देने से ही रोगी की दशा बदलने लगती और उसकी शीताङ्ग दशा प्रतिकूल रूप में हो जाती है।

काटने के बाद विष रक्त में प्रविष्ट होता है और खून के परमाणुओं के साथ मिल कर हृदय की तरफ जाने का उपक्रम करता है। विष के रक्त में मिलते ही शरीर में चींटी सी चलने लगती है और खून का रंग काटने वाले साँप के दंश के अनुसार ही काला पीला सफेद या भूरा होने लगता है। रक्त को विकृत करने के बाद विष मांस के ऊपर अपना असर दिखलाता है,

जिससे मांस में गांठें पड़ जाती और आंख, मुँह, दांत, पेशाब आदि का रंग भी खून के अनुसार हो जाता है।

शीघ्रता से फिर विष मेदा में पहुँच कर आमाशय के ऊपर अपना अधिकार जमाता है और पक्वाशय की क्रिया को बिगाड़ कर हृदय और फेफड़े की तरफ दौड़ता है। इस समय तक यदि रोगी का उपचार होने लग गया है और हृदय रक्षक क्रिया के साथ २ वमन विरेचन की क्रिया कराई जाने लगी है, तब तो हृदय विष को अपने पास नहीं आने देगा और वमन विरेचन के रास्ते विष बाहर निकल जायगा। अन्यथा जहां विष हृदय तक पहुंचा और उसके चर्खे में घुन लगते ही खून साफ होने की क्रिया बन्द हुई, और रोगी का जीवनदीप शान्त हुआ।

तृतीय परिच्छेद

—:※:※:—

सर्प दंश की चिकित्सा

सभी सांप विषैले नहीं होते, और न विषैले सांप के काटने से ही मौत अनिवार्य होती है। यह सच है कि मौत का कोई इलाज नहीं है, किन्तु बिना मौत के आये ही उसकी इन्तजारी में चुप चांप बैठ जाना समझदारी नहीं है। चिकित्सक के लिए धैर्य बहुत ही जरूरी है, यह तो मनुष्य मात्र के लिए आवश्यक है। यह भी हो सकता है कि काटने वाला सांप विषैला न हो और यह भी असम्भव नहीं कि विषैला सांप काटने पर भी

अपना जहर न डाल सका हो और यह भी मुमकिन है कि इस के पहले वह किसी दूसरे को काटने की वजह से विष नही डाल सका हो। इन सब बातों को देखते हुए काटे हुए रोगी का इलाज अवश्य करना चाहिए।

पहिली आवश्यक बात तो यह है कि रोगी को पूरी तसल्ली दी जाय चूँकि सांप के काटने के नाम से ही चाहे शरीर में विष भी न आया हो रोगी के हाथ पैर फूलने लगते हैं और वह विकार ग्रस्त होने लगता है। दंश स्थान को देख कर सांप के विषैले और निर्विष होने का निश्चय कर लेना चाहिये। सर्प विष के शरीर में प्रविष्ट होने के बाद दंश स्थान पर खरोंच अवश्य होती है और विषैले दाँतों के दो छेद भी नजर आते हैं। जो सांप जहरीले होते हैं उनके दो ही दांतों का चिन्ह दंश स्थान पर होता है। विष हीन सांप के काटने पर बहुत से दांतों के चिन्ह नजर आते हैं। विषैले सांप के काटने पर जब दंश स्थान पर विष आजाता है, तो शीघ्र ही विष के विकार भी प्रकट होने लगते हैं। काटी हुई जगह सुन्न पड़ने लगती, भयंकर जलन होने लगती तथा सांप की प्रकृति के अनुसार ही दूसरे विकार भी प्रकट होने लगते हैं। एक खास बात यह भी होती है कि विषैले सर्प के काटने पर दंश स्थान का खून जम जायगा विष भीतर ही भीतर खून में मिल कर हृदय की तरफ जाने का उपक्रम करेगा। विष हीन साँप के काटने पर दंश स्थान से खून बहने लगता है। चूंकि विष के अभाव में खून का बाहर निकलना जरूरी है।

यह निश्चय होने पर कि काटने वाला साँप विषैला था और शरीर में विष प्रविष्ट हो गया है, तो तत्काल उपचार करने चाहिऐं।

उत्तर कर्तन—सांप को ही काट लेना

दष्टमात्रो दशेदाशु तमेव पन्नगाशिनम्।

सांप का इलाज स्वयं सांप ही है यह बात आज प्रयोगों से भी सिद्ध होती जा रही है। सांप के विष से तैयार किया जाने वाला एन्टीवीनीन Antivenene साँप के विष को नष्ट करने में सफल होता जा रहा है। सर्प विष से तैयार होने वाली औषधियां जिस तरह अपना चमत्कार दिखलाती हैं सर्प का खून भी उसी तरह अपना चमत्कार दिखलाता है सर्प से काटे हुए मनुष्य के दांतों पर यदि सर्प का खून लगा दिया जाय तो सर्प विष का कुछ भी प्रभाव नहीं होगा—सर्प का खून ही सर्प के विष का अवरोधक बन जायगा। इसी रहस्य को समझ कर प्राचीन आचार्यों ने सर्प विष की चिकित्सा में पहिला उपचार सांप को काट लेना ही बतलाया है। सांप के खून में विष नाशक शक्ति के होने का एक प्रमाण न्योला भी है। मालूम होता है किसी दयालु ऋषि ने न्योले को यह रहस्य बतला दिया है सांप और न्योले की लड़ाई में सांप की पराजय होती है—सांप के काटने पर भी न्योले के शरीर में सर्प विष का कोई असर नहीं होता इसका कारण यही है, कि वह स्वयं भी सांप को काटता रहता है। न्योले के मुँह में लगा हुआ सांप का खून ही उसके विषाक्त न होने

का कारण होता है।

उत्तर कर्तन का प्रयोग जिस तरह भयानक और साहस पूर्ण है, उसी तरह सोलह आने अचूक और रामबाण है। सांप के काटने पर साहस के साथ उसे पकड़ के काट लेना चाहिये बस यही सर्प विष की सफल चिकित्सा है। काटने के बाद स्वयं सांप भी अशक्त हो जाता है, और भर सक वह किसी निरापद स्थान में जाकर विश्राम करना चाहता है, बहुधा तो आस पास ही किसी छिपे हुये स्थान में घुस जाता है इस लिये साहस करने पर उसका पकड़ लेना असम्भव नहीं होता। यह भी स्मरण रखने की बात है कि जिस सांप ने काटा हो, उसी को काटना चाहिये—चूंके इनकी प्रकृति के अनुसार ही प्रत्येक के विष का उपचार उसी का रक्त होता है।

किन्तु जब यह क्रिया सम्भव नही हो—सांप छिप गया हो या साहस नहीं हो तो दूसरे उपचार करने चाहिये। प्रारम्भिक उपचारों का करना बहुत ही आवश्यक है और इन्हें प्रत्येक व्यक्ति स्वयं सर्प दंशित भी बिना दिक्कत के कर सकता है।

बन्धन क्रिया—दंश स्थान को बांध देना

सांप के काटने के बाद जब विष खून में मिल जाता है तो वह रक्त वाही शिराओं के द्वारा हृदय की तरफ जाने का उपक्रम करता है। शरीर में प्रविष्ट होने के बाद सर्प विष खून में मिलकर हृदय की तरफ दौड़ता है-इसलिये उसकी गति को रोकने के लिये बन्धन बांधना बहुत ही आवश्यक और उपयुक्त

है :। सौ गिनने में जितना समय लगता है उतने ही समय तक विष दंश स्थान में रहता है-बाद में वह शिराओं के द्वारा हृदय की तरफ़ दौड़ता है। इसलिये बन्धन आदि क्रियाएं तत्काल ही करनी चाहिये :।

वंधन बांधने में यदि तीन मिनट की भी देर होगई है-तो विष आगे बढ़ जायगा। बन्धन से खून की गति रुक जाती है-जिससे विष वहीं रुक जाता है, फिर रक्त मोक्षण आदि क्रियाओं से उसे बाहर निकाला या नष्टकिया जा सकता है :।

साधारणतः हाथ या पैर में ही सांप काटता है-और इन स्थानों में बन्धन की क्रिया आसानी से और उचित रूप से हो सकती है :। काटे हुये स्थान से चार अंगुल ऊपर कसके एक बन्धन लगादीजिये-इस बन्धन से चार अंगुल ऊपर एक बन्धन और लगादीजिये ताकी खून और विषकी गति रुक जाय। बन्धन क्रिया के पहिले यह जरूर देख लेना चाहिये कि बिष कहां तक ऊपर पहुंचा है। यदि विष ऊपर चला गया और बन्धन नीचे लगाया गया तो सारा मामला गड़बड़ हो जायगा। विष की वजह से शरीर के रोम गिरजाते हैं - यह एक आसान परीक्षा है। जहांतक रोम गिर गये हों वहां तक यह समझ लेना चाहिये कि विष यहां आगया, बस इसी के ऊपर बंधन लगाना चाहिये।

बन्धन लगनाने के बाद भी यह जरूर देख लेना चाहिये कि बन्धन के ऊपरी हिस्से का का खून लाल है या नहीं-अगर

बन्धन के ऊपरी हिस्से का खून भी काला नजर आता है तो बन्धन गलत लगा हुआ समझिये—बन्धन के बाद अग्नि दाह रक्त मोक्षण आदि क्रियाएं भी तत्काल ही करनी चाहियें – हाथ पैर के अलावा दूसरे स्थानों पर बन्धन नहीं लग सकता इसलिये वहां दूसरी क्रियाएं करनी चाहिये।

कर्त्तन क्रिया—काट देना

हाथ पैरों की अंगुलियों में यदि सांप ने काटा हो—तो उसके लिये सबसे अधिक रामवाण उपाय उस अंगुलि को काट देना है। देहाती आदमी ऐसी स्थिति में साहस पूर्वक गंडासे से उस अंगुलि को काट देता है— जिससे वहीं की वहीं मामला खतम हो जाता है। काट देने में समय का पूरा ध्यान रखना चाहिये—सांप काटने के २ मिनट के भीतर ही यह क्रिया करनी चाहिये, आयुर्वैदिक सिद्धान्त के अनुसार १०० गिनमें जितना समय लगता है उतने समय तक ही सर्प विष उस जगह रहता है बाद में रस और रक्त में मिल कर प्रगतिशील हो जाता है। काटने का काम छुरी उस्तरा गंडासा और कुल्हाड़े से लिया जा सकता है। विष के रक्त में मिलने के बाद काटने की क्रिया न करके अग्नि दाह या रक्त मोक्षण की क्रिया करनी चाहिये।

अग्नि दाह—

विष के रक्त में मिलने के पहिले ही तत्काल काटी हुई जगह को जला देना भी अच्छा उपाय है। आयुर्वेद में मंडलि सर्प के दंश को जलाना निषिद्ध है चूंके वह सर्प भी पित्त प्रकृति

का होता है और अग्निदाह से भी पित्त बढ़ता है किन्तु सांप काटने के बाद की तात्कालिक क्रियाओं में इतनी जल्दी सर्प का न होना कठिन होता है—साथ ही आधुनिक दाहक औषधियाँ अग्नि की जैसी पित्त वर्धक भी नहीं होती—और यदि हों भी तो विष दाह के बाद बढ़ हुये पित्त का उपचार कोई खास कठिन नही होता।

जलते हुये अंगारे से विष को जला देना तो सर्व विदित उपाय है—दहकता अंगारा वहीं की वहीं विष को भस्म कर देता ऐलोपैथिक औषधियों में कार्बोलिक एसिडनाइट्रिक ऐसिड पोटासियम परमेंगनेट और आयुर्वेदिक औषधियों में शंखद्राव लगाने से यह कार्य हो सकता है।

रक्त मोक्षण—खून निकाल देना।

काटी हुई जगह का दूषित खून बाहर निकाल देना—सर्प दंशन का अच्छा उपाय है। सांप के काटते ही यदि काटी हुई जगह के ऊपर नीचे बन्धन लगा दिया हो तो इस क्रिया को करना चाहिये।

काटे हुये स्थान को छुरी या उस्तरे से चीर देना चाहिये ताकि खून निकलने लगे फिर उस स्थान को ऊपर से दबाकर नीचे की तरफ दबाना चाहिये जिससे बन्धन लगाई हुई जगह तक का सारा खून खिच कर चला आवे। ऐसे स्थानों में जहां बन्धन न लग सका हो और खून निकालने में सुविधा न हो—काटी हुई जगह को चीर कर उसमें थोड़ा नमक भरदें और ऊपर

से गर्म पानी के छींटे देते रहें—इस तरह खून स्वतः ही बाहर निकलना शुरू हो जायगा बाद में खून निकलने के बाद काटे हुये स्थान का सड़ा हुआ मांस काटके उस जगह को नाइट्रिक एसिड जैसे तेज क्षार से जलादें।

अगर मिल सकें—तो जोंक लगवा के खून निकलवा दें या सींगी का प्रयोग करें—नाजुक तबियत के मनुष्यों के लिये ये प्रयोग अधिक सुविधाजनक होते हैं। सांप की काटी हुई जगह का खून जम जाता है, इस लिये जोंक या सींगी लगाने के पहिले इस जगह को छुरी से जरा खरोंच देना चाहिये। जब तक विषाक्त खून रहेगा जोंक मरती जायगी शुद्ध खून आने पर वह जीती रहती है।

कौपिंग ग्लास का प्रयोग

भी खून निकालने के लिये अच्छा सुविधाजनक होता है। शीशे के छोटे ग्लास में, ग्लास न होने पर किसी कटोरी के पेंदे के ऊपर थोड़ी सी स्प्रिट लगादें फिर दियासलाई से उसे जलादें। जब स्प्रिट बुझने को आवे तो उस ग्लास को काटे हुये स्थान पर जोर से दबाकर रखदें ग्लास जम जायगा। अब ग्लास में खून आना शुरू होगा जब ग्लास भर जाय उसे उतारलें फिर उसी तरह ग्लास में स्प्रिट लगा के चिपका दें। इस तरह जब तक शुद्ध खून न आने लगे ग्लास लगाते रहें।

सावधानी

रक्त मोक्षण के समय रोगी की दशा भी देखते रहें, कहीं

ऐसा न हो कि अधिक खून निकल जाने से ही रोगी का प्राणान्त हो जाय। इस समय संजीवनी सुरा ब्राण्डी आदि कोई उत्तेजक चीज रोगी को देनी चाहिये।

वमन और विरेचन

सांप के काटने के बाद यदि कुछ समय व्यतीत हो गया है—और विषनाशक तात्कालिक क्रिया यदि नहीं की गई है, तो रक्त में प्रविष्ट हुआ विष आमाशय और पक्वाशय के रास्ते हृदय की तरफ जाने का उपक्रम करने लगता है। ऐसी दशा में वमन और विरेचन का प्रयोग करना चाहिये—वमन और विरेचन के रास्ते दूषित विकार के साथ विष भी बाहर निकलता है।

विष के पक्वाशय तक पहुंचने तक जिसके साधारण लक्षण ये होते हैं "कोठे में प्रदाह, दर्द, अफारा, मलमूत्र तथा अपानवायु का अवरोध" विरेचन ही देना चाहिये। पहिले विरेचन देके बाद में यदि वमन भी करादीजाय तो और भी अच्छा है।

विरेचक औषधियां

साधारणतः मुंह के रास्ते खाई हुई औषधियां विलम्ब से दस्त लाती हैं—और इस समय तत्काल दस्त कराने की जरूरत होती है, इसलिये रेचक एनीमा का प्रयोग करना चाहिये। काष्ट्रायल और आधा सेर साबुन घुला हुआ गर्म जल—एनीमा द्वारा गुदा मार्ग से प्रविष्ट कराइये—इससे तत्काल विरेचन होने लगेगा। मुंह के रास्ते दी जानेवाली औषधियां

बृहत् इच्छा भेदीरस, नाराचरस, और काष्ट्रायल तीनों चीजें ही विकार को बाहर निकालती हैं :।

वामक वस्तुएें

जब विषका असर कफ तक पहुँच गया हो—रोगी को बेहोशी आने लगी हो. ठंड लगती हो, मुंह से पानी गिरने लगगया हो- और नशे कीझेंप शुरू होगई हो तो वमन करानी चाहिये। २ तो० नमक पानी में घोलकर पिलाइये। कै होने के बाद फिर नमक के साथ मंडूर भस्म पानी में घोलकर पिलाइये। जबतक विकार बाहर नहीं निकल आवे तब तक इसी तरह करते रहिये।

परिषेक

' वमितं से चयेत्तस्मात्—शीतलेन जलेनच '

वमन कराने के बाद परिषेक क्रिया करनी चाहिये। होश में लाने के लिये यह क्रिया बहुत उपयुक्त है :। रोगी के मस्तक के ठीक बीच में, पानी की धारा गिरावें इस धारास्नान से १० १५ मिनट में रोगी को होश आजाता है। विष की प्रकृति बहुत गर्म होती है इसलिये वमन कराने के बाद शरीर में अवशिष्ट विष की गर्मी को दूर करने के लिये ठंडे जलकी धारा प्रयोग बहुत लाभ प्रद होता है। धारास्नान से रोगी के चेतनास्थान की प्रसुप्त शक्तियां जाग्रत होजाती हैं—रोगी को ठंड और गर्मी का अनुभव होने लगता है—जो कि रोगी के जीवित हो जाने का एक खास चिन्ह है:।

बाष्पस्वेद

बफारे के द्वारा शरीरस्थ विप को पसीने के रूप में निकालदेना भी एक अच्छा उपाय है। इसकी सरल विधि यह है कि रोगी को नंगा करके चारपाई पर लिटादें :। नागदमनी—ईश्वरमूल को पानी में डालकर खूब औटालें जब भाफ निकलने लगे तब रोगी की गरदन, पेट और पैरों के नीचे भाफ देनी चाहिये। भाफ के द्वारा जब खूब पसीना निकल जाय रोगी को शरीर हल्का मालूम देने लगे और सर्वाङ्ग में रोमाञ्च हो जाय तो वाष्प स्वेद रोक देना चाहिये :।

उपधान क्रिया

रोगी को प्रकृतिस्थ करना, उपधान क्रिया है। वमन विरेचन—परिषेक स्वेद आदि क्रियाओं के बाद, रोगी को पलंग पर लिटा देना चाहियेः और उसके दिमाग को प्रकृतिस्थ बनाने वाली बातें कहनी चाहियें। सर्प और सर्प-विष का ध्यान हटाने का प्रयत्न करना आवश्यक है :। रोगी सोने नहीं पावे, इसका पूरा ध्यान रखना चाहिये—चूंकि सोने से विप का प्रभाव बढ़ता है :। विषनाशक, लेप, अंजन औषध आदि का प्रयोग भी करना चाहिये।

हृदयावरण क्रिया—

सर्प विप पित्त प्रकृति और उष्ण गुण होता है, यह बाहर से भीतर प्रवेश करके रक्त के साथ हृदय की तरफ जाता है।

विप के हृदय तक पहुंचने में कुछ समय लगता है और यह समय ही मनुष्य के लिये स्वर्ण सुयोग होता है। इस समय में रोगी की प्राण रक्षा का आवश्यक उपाय किया जा सकता है। वमन विरेचन आदि उपायों से विप के बाहर निकालने की क्रिया की जाती है और घी से हृदय की रक्षा का उपाय किया जाता है। सभी विपों में घी का प्रयोग लाभदायक होता है। स्थावर हो या जंगम दोनों तरह के विपों में घृत पान बड़ा ही मुफीद पड़ता है। जिस समय विप अपनी तेजी से हृदय को खींचता है—उस समय घी पिलाने से शान्ति तो मिलती ही है हृदय की रक्षा भी होती है। घृत पिला देने से घृत के मृदु शीत- स्निग्ध गुण, विप के तीक्ष्ण-उष्ण रूक्षादि गुणों को शमन कर देते हैं जिससे विप का घातक प्रभाव नष्ट हो जाता है।
केवल घी या घी मिली हुई कोई विपनाशक दवा पिलानी चाहिये जिससे हृदय की रक्षा हो और ओज भी बना रहे।

विपस्य विपमौपधम्—(प्रतिविप क्रिया)

'विप की दवा विप ही है' यह लौकिक कहावत अक्षरशः सच है। कांटा कांटे से ही निकलता है, और जहर, जहर से ही दूर होता है। स्थावर विप—संखिया, वत्सनाभ आदि के खाने पर जब रोगी की दशा अत्यधिक विकृत हो जाती है, तो सांप से कटाने पर रोगी स्वस्थ हो जाता है। स्थावर और जंगम दोनों ही विप विपरीत गुणवाले हैं। जहां स्थावर विष कफ प्रकृतिक

शीत गुणवाला है, वहां जंगम विष पित्त प्रकृति के उष्ण गुणवाला है दोनों की प्रकृति जुदा है, और दोनों के गुण भी परस्पर विरोधी हैं :। यह प्रकृति गुण विरोधिता ही रोगी के हक में कल्याण कारिणी होती है। एक बात यह भी है कि स्थावर और जंगम दोनो विषों की प्रकृति गुण विरोधिता के साथ ही इनकी गति विरोधिता भी है :—

जंगम विष बाहर से अन्दर जाता है—चूंके सांप वगरह: बाह्य भाग पर ही काटते हैं, और स्थावर विष संखिया वगरह: भीतर से बाहर आते हैं—चूंके वह खाये जाते हैं, जिससे एक दम कोठे में जाते हैं :। इसके अतिरिक्त स्थावर विष पहिले आमाशय में जाकर फिर रक्त की तरफ जाता है—और जंगम विष पहिले रक्त में प्रविष्ट होके बाद में आमाशय की तरफ जाता है। इस तरह स्थावर विष की अधोगति है—और जंगम की ऊर्ध्वगति—

प्रतिविष की क्रिया करने में पूरी सावधानी रखनी चाहिये—और यह उसी समय करनी चाहिये, जब दूसरे उपाय असफल होते जारहे हों। साधारणतः २ रत्ती शुद्ध संखिया-घी के साथ खिला देना चाहिये। भयानक दशा में १ माशा तक दिया जा सकता है :।—संखिया के अभाव में वत्सनाभ विष देना चाहिये।

होश में लाने वाली क्रिया—

उपचार में विलम्ब होने पर रोगी की दशा का बिगड़ना

स्वाभाविक ही है—और सर्प विप तो बड़ी शीघ्रता के साथ अपना कार्य करता है। कभी २ ऐसा भी होता है कि सर्पदंशन के बाद विप के प्रभाव से कफ की विकृति होके स्रोतावरोध होने लगता है—जिसके फलस्वरूप वायु की गति भी धीरे २ बहुत कम होने लगती है। इस दशा में रोगी श्वाशोच्छ्वास मुमूर्षु की तरह होता है। नाड़ी और श्वास की गति रुक जाती है—जिससे रोगी मरा हुआ सा मालूम पड़ने लगता है—यद्यपि अभी तक उसका प्राणान्त नहीं हुआ है।

प्राचीन काल में—सांप के काटे हुये लोगों को जलाते नहीं थे मिट्टी में दफना देते थे—सूखे गोवर के ढेर में दवा देने की प्रथा भी मौजूद थी। वाद में मिट्टी की संजीवनी शक्ति और विप चिकित्सक के उपयुक्त उपाचार से महिनों बाद रोगी जी उठता था।

श्वासावरोध की दशा में—पहिले रोगी की परीक्षा अच्छी तरह कर लेनी चाहिये जिससे उसके जीवित और मृत होने का सन्देह दूर हो जाय।

रोगी की आँखों की पुतलियों में—यदि देखने वाले की छाया दिखलाई पड़े तो समझ लेना चाहिये कि अभी शरीर में प्राण मौजूद है। रात्रि के समय रोगी की आँखों के सामने दीपक रखके देखना चाहिये। यदि दीपक का प्रकाश रोगी की आंखों में नजर आता है तो अभी वह मरा नहीं है।

इस दशा में रोगी को होश में लाने का उपाय करना चाहिये

रोगी के मस्तक को छुरे से छीलकर काकपद—कौये के पैर जैसा चिह्न बनादें और बकरी, गाय, मुर्गा आदि जिसका मांस मिल सके उस पर (निशान पर) रखदें। मांस के अभाव में ताजा गोबर रखना चहिये काक पद का उल्लेख चरक में हुआ है—

विप दूषित कफ मार्गः स्रोतः संरोध रुद्धवायुश्च ।
मृत इव श्वसेन मर्त्यः स्याद साध्य लिङ्गै विहीनश्च ॥
चर्मकपायाः कल्कं बिल्वसमं मूर्ध्नि काक पद मस्य ।
कृत्वा कुर्यात् कटभीं कटु कट्फल प्रधमनञ्च ॥

(चरक)

गला साफ करने के लिये—बड़ी कटेली बिजौरा नींबू और माल कांगनी का रस जीभ, आंख, कान और नाक में टपकाना चाहिये।

आंखे खोलने के लिये, दारूहल्दी, हल्दी, त्रिकटु, कनेर, करंज और तुलसी को बकरी के मूत्र में पीस कर अंजन कराना चाहिये।

वेगानुसार चिकित्सा क्रम

सर्पों के विप के सात वेग होते हैं, इसका उल्लेख पहिले किया जा चुका है। वेगानुसारी लक्षणों के अनुसार शरीर में विप का प्रभाव उत्तरोत्तर क्रम से हृदय की तरफ जाता है अ रस रक्त-मांस आदि धातुओं को दूषित करके, विप ग्रहणी कला को खराब करके, हृदय पर आक्रमण करता है —और हृदय के दूषित होने के बाद ही रोगी का प्राणान्त होता है।—

दर्वीकर मण्डली और राजीमन्त सर्पों के विष के अलग १ वेग होते हैं :-अतः प्रत्येक के वेगके अनुसार ही चिकित्सा क्रम होता है :।-

'फणिनां विष वेगेतु प्रथमं शोणितं हरेत्'

दर्वीकर सापों के विष के प्रथम वेग में रक्तमोक्षण क्रिया करनी चाहिये। फस्त खोलनी चाहिये-या विषको चुसवाना चाहिये।

द्वितीये मधुसर्पिभ्यां पाययेतागदं भिषक्

दूसरे वेग में जब विष माँस को दूषित करता है तब शहत और घी के साथ विषनाशक औषधि का पान कराना चाहिये।

नस्य कर्माञ्जने युञ्जातृतीये विषनाशकैः

तीसरे वेग में—विषनाशक औषधियों का नस्य देना और आँखों में अंजन करना चाहिये।

'वान्तं चतुर्थे पूर्वोक्ताम्-यवागूमथ दापयेत्'

चौथे वेगमें उल्टी करानेवाली यवागू पिलानी चाहिये

शीतोप चारं कृत्वा भिषक पञ्चम षष्ठयोः

पापयेच्छोधनं तीक्ष्णं-- यवाँगूञ्चापिं........

पाँचवें और छठे वेग में शीतल उपचार करके तेज विरेचन देना चाहिये-एनिमा लगाके मल को निकाल देना चाहिये, ताकिमल के साथ विष बाहर निकलआवे :।-

सप्तमे त्ववपीडेन शिरःतीक्ष्णेण शोधयेत् ।

तीक्ष्णमेवाञ्जनं दद्यात् तद्वणशस्त्रेण मूर्ध्नि च ॥
कृत्वा काकपदं चर्म सासृक् वा पिशितं क्षिपेत्।

सातवां वेग घातक वेग ही प्रायः होता है। इस समय अवपीडन नस्य देकर शिर का शोधन करना चाहिये तेज अंजन लगाना चाहिये। इतने पर यदि रोगी को होश न हो, तो मस्तक में काक पद क्रिया करनी चाहिये।

पूर्वे मण्डलिनां वेगे दर्वीकर व दाचरेत्

मण्डलि सांपों के पहिले वेग में-काटे हुये स्थान का खून निकालना चाहिये।

अगदं मधु सर्पिभ्यां द्वितीयं पाययेतच ।
वामयित्वा यवागूं च पूर्वोक्तामथ दापयेत् ॥

दूसरे वेग में शहत और घी के साथ विपनाशक औषधियों का पान कराके-वमन करानी चाहिये, वाद में विप नाशक यवागू का पान कराना चाहिये,

तृतीये शोधितं तीक्ष्णैः—यवागूस्पाय ये द्धिताम्

तीसरे वेग में विरेचन देना चाहिये। अच्छी तरह शोधन होने के वाद यवागू पिलानी चाहिए।

'चतुर्थे पंचमे वाऽपि दर्वीकर वदाचरेत्।

चौथे और पांचवे वेग में दर्वीकर के वेगों के अनुसार चिकित्सा करनी चाहिये।

काकोल्यादिर्हितः षष्ठे पयश्च मधुरो गणः

छठे वेग में-काकोल्यादि गण की औषधियों के साथ

सिद्ध किया हुआ दूध पिलाना चाहिये ।:-

हितो ऽवपीडेत्वगदः-सप्तमे विपनाशनः।-

सातवें वेग में अवपीडत नस्य-विपनाशक अंजन और काकपद की क्रिया करनी चाहिये—

'अथ राजिमतां वेगे प्रथमे शोणितं हरेत् '

राजिमन्त सर्प के पहिले वेग में खून निकालने की क्रिया करनी चाहिये ।-

अगदं मधु सर्पिभ्यां-संयुक्तं पाययेतच्च
वमनं द्वितीये त्वगदम्-पाययेत् विपनाशनम् ।-

दूसरे वेग में-शहत घी के साथ औपध पिलाके वमन करानी चाहिये-फिर विषनाशक औपधि पिलानी चाहिये ।-

तृतीया दिपुत्रिस्त्वेव-विधिर्दर्वीकरो हितः-

तीसरे चौथे पाँचवें वेग में दर्वीकर की विधि का उपयोग करना चाहिये ।-

पष्ठे ऽञ्जनम् तीक्ष्णतमम्-

छठे वेग में तीक्ष्ण अंजन लगाना लगाना चाहिये ।-

अवपीडश्च सप्तमे—

सातवें वेग में अवपीडन नस्य देके काकपद क्रिया करनी चाहिये ।

देवमंजरी

यह वर्षाकालीन औपध, वर्षाऋतु में पैदा होती-और कार्तिक तक रहता है । इसका क्षुप प्रायः १ फुट ऊंचा

होता है. इसके पत्ते पुदीना के पत्तों की तरह आध इञ्च चौड़े और एक इंच लंबे होते हैं। अवध में सर्प विप के लिये यह अक्सीर औषध मानी जाती है।

१॥तो० देव मंजरी को ५ कालीमिर्चों के साथ पीसकर पानी में घोलकर पिलादें।—

देव मंजरी का स्वरस	१ पाव
कालीमिर्च	१ तो०
देशीकपूर	३ माशा
पिपरमेंट	२ माशा
अजवायन सत	१ माशा
सुरा	५ तोला

सत्व और सुरा को घोटकर बाकी चीजें मिलाकर रखलें।

जरूरत के मुताबिक ३-३ माशा दवा दवा १५-१५ मिनिट के अन्तर से पिलावें। ('धन्वन्तरि,)

ईश्वर मूल

ईश्वर मूल के ४ माशे पत्ते, और ५ काली मिर्च दोनों को पानी से महीन पीसकर पिलादें। काटे हुये स्थान पर ईश्वर मूल का पता पीसकर लेप करदें। कठिन अवस्था में ईश्वर मूल के पत्ते ६ माशा, मिर्च ७ और आमकी गुठली ३ माशा को पानी में मिलाकर मिलावें। एक मात्रा में ही आखें खुल जाती हैं। २०-२० मिनट के अन्तर से ३ माशा पिलाने से विप का प्रभाव नष्ट हो जाता है।

ईश्वर मूल का स्वरस	१ तोला
पिपरमेंट	२ माशा
भीमसेनी कपूर	२ माशा

खरल करके दवा रखलें। १५-१५ मिनट के अन्तर से ३-३ माशे की मात्रा दें दंश स्थान पर भी इसे लगावें।

ईश्वर मूल का सत्व—काटी हुई जगह पर—चीर के भरदें। नस्य दें, और १५-१५ मिनिट के अन्तर से ४-४ रत्ती सत्व को घृत में मिलाकर देते रहें।

ईश्वर मूल ५ छटाँक, और देशी कपूर १ तो० को बारीक पीसकर १ सेर पानी में घोल लें। पतली धार से रोगी के सर पर तरेड़ा देने से रोगी होश में आजाता है :।

पीपल

पीपल के वृक्ष की पतली-पतली दो टहनियां तोड़ कर उनके मुख एक तरफ से गोल करलें. और उन्हें रोगी के दोनों कानों में डालें। सांप के काटे हुये व्यक्ति को दो मजबूत आदमी पकड़े रहें जिससे उसका सिर न हिलने पावे क्योंकि सिर हिलजाने से परदा फटजाने का भय रहता है :। रोगी को होश आने पर लकड़ी निकाललें। इस प्रयोग से कभी १५ मिनिट में, कभी आध घंटे में—और कभी एक या डेढ़ घंटे में रोगी को होश आजाता है:।

एरण्ड

का आधा पाव रस थोड़े जल में मिलाकर रोगी को पिलावें, इससे वमन विरेचन होके रोगी अच्छा होजाता है:।

नीम

के पत्ते खिलाने चाहियें-पत्तों का रस या छाल का काढ़ा पिलाना चाहिये ? जब तक कडुआ पन मालूम नहीं दे तबतक यह क्रिया करनी चाहिये ।—

कनेर

सफेद कनेर की जड़को घिसकर दंश स्थान पर लगादें— पीने को पत्तों का रस देना चाहिये । ग्लानि होने पर घी पिलाना चाहिये ।

सफेद कनेर के सूखे हुये फूलों में समभाग सूखी तमाखू का चूरा मिलाकर सुँघाना भी अच्छा होता है:।

गृह धूमो हरिद्रे द्वे, समूलं तंडुली यकम्,
अपि वासुकिना दष्टः पिबेद्दधि घृताप्लुतम् ।

(चक्रदत्त)

घर का धुआं, हल्दी, दारु हल्दी, और चौलाई को पीसकर घी या दही में मिलाकर पिलादेने से विष का प्रभाव नष्ट हो जाता है ।

द्विपलं नत कुष्टाभ्यां-घृत चौद्रं चतुष्पलम् ।
अपि तक्षक दष्टानां पानमेतत् सुखप्रदम् ॥

(चक्रदत्त)

तगर और कूठ का चूर्ण ८ तो० घी और शहद १६ तो० सबको मिलाकर पीने से तक्षक सर्प का विष भी नष्ट होता जाता है ।

महागदः

त्रिवृ द्विशाले मधुके हरिद्रे ।
मंजिष्ठ वर्गां लवणं च सर्वम् ॥
कटुत्रिकं चैव विचूर्णितानि ।
शृङ्गे निदध्यान् मधुना युतानि ॥
एषोऽगदो हन्त्युपयुज्य मानः ।
पानाञ्जनाभ्यंजन नस्य योगैः ।
अवार्य वीर्यो विपवेगहन्ता ॥
महागदो नाम महा प्रभावः ॥

(चक्रदत्त)

निसोथ, इन्द्रायण, मुल्हठी, दारुहल्दी मंजिष्ठा दिगण की औषधियां सारे नमक और त्रिकटु सबको पीस छान कर शहत मिलाकर सींग में रखदें। इसके पीने अंजन करने नस्य देने और लगाने से विप नष्ट हो जाता है।

—शिरीपारिष्ट—

पचेत् तुलार्द्धं द्विद्रोणे शिरीषस्य जले सुधीः ।
पाद शेषे कपाये ऽस्मिन् गुड तुला द्वयम् ॥
कृष्णा प्रियंगु कुष्ठैला नीलिनी नागकेशरम् ।
रजन्यौ पलमानेन-दद्यादत्र च नागरम् ।
मासादूर्ध्वं जातरसं यथा मात्रं प्रयोजयेत ।
शिरीषारिष्ट मित्येतत् विपव्यापद् विनाशनम् ॥

(भैषज्यरत्नावली)

शिरीष छाल ५ सेर, जल ४ द्रोण। अवशिष्टकाथ १ द्रोण। इसमें २० सेर गुड़ घोलकर पिप्पली, प्रियंगु, छोटी इलायची नीली मूल, नागकेशर हल्दी दारू हल्दी और सोंठ प्रत्येक ८ तो० औषध का चूर्ण डालकर १ मास तक पड़ा रहने दें। बाद में छान कर विकारों में प्रयाग करना चाहिये।

बन्ध्या कर्कोटीकी मूलम् छागमूत्रेणभावितम्
नस्यं कांजिक संपिष्टम्-संज्ञोपहत चेतसः। (यो)

बांझ ककोड़े की जड़ को बकरे के मूत्र में भावित करके रखलें। फिर कांजी में पीसकर नस्य देने से रोगी को होश आजाता है।

जलेन लाङ्गली कन्दं-नस्यं सर्व विषापनुत्-

कलिहारी को जड़ को पानी से पीसकर नस्य देनेसे विष विकार नष्ट हो जाते हैं:।—

वारिणा टंकण पीत- मथवाऽर्कस्य मूलकम्।

जलसे सुहागे को अथवा आककी जड़ को पीने से विष नष्ट होता है।

कालवज्रा शनिरस

पारदं गन्धकं तुल्यं टङ्कणं रजनी समम्-
देवदाल्या द्रवैर्मर्द्य—दिनं शुकंष्तु भक्षयेत्।
नर मूत्रं पिवे च्चानु कालदष्टोऽपि जीवति—

शुद्ध पारद-गन्धक, नीलाथो था, सुहागा, और हल्दी, सब चीजें सम भाग लेकर देवदाली के रस से एक दिन घोटकर

रखलें। सर्प विष के रोगी को नर मूत्र के साथ खिलाने से विष नष्ट होजाता है।

आचेतस चूर्ण

> ससप्त पर्णा त्कुटजात् सनिम्बात्
> अब्दामयो शीरनतानि ताप्यम्।
> रोध्रं विदध्यान्नवमं नवाङ्गम्
> प्राचेतसं चूर्ण मुदाहरन्ति ॥ (भो. र.)

सतौने की छाल, कुड़े की छाल, नीम की छाल, नागर मोथा, कूठ, खस, तगर, सुवर्णमाक्षिक भस्म और लोध, इन सबको सम भाग लेकर चूर्ण करलें। विष रोगी को शहद के साथ खिलाने से स्थावर और जंगम दोनो तरह के विष नष्ट हो जाते हैं —

मयूर पिच्छादि चूर्ण

मोर के पंख, चौलाई और बकायन के फल, इन सबका चूर्ण स्थावर और जंगम विषको दूर करता है।

विषहरी वर्ति

> जयपालस्य मज्जानं भाव ये न्निम्बुक द्रवैः—।
> एक विंशति वारन्तु-ततोबर्ति प्रकल्पयेत् ॥
> मनुष्य लालया घृष्ट्वा ततो नेत्रे प्रदापयेत्।
> सर्पदष्ट विषं ;जित्वा-संजीवयति मानवम् ॥—

जमाल गोटे के बीज की मज्जा को नींबू के रस की २१ भावना देकर वत्ती बनालेनी चाहिये।—मनुष्य की लार में

घिसकर सर्प विप के रोगी की आँखों में अंजन करने से रोगी को होश आजाता है ।:

घृतादि सप्तक–अगद

घृत मधुनवनीतं–पिप्पली शृङ्ग वेरम्
मरिचमपि चदद्यात्–सप्तमं सैन्धवंच ।
यदि भवति सरोपं तक्षकेणा ऽपि दृष्टो
ऽगदमिह खलु पीत्वा–निर्विपस्तत्क्षणेन।। (यो. र.)

घी, शहत, मक्खन, पीपल, सोंठ, मिरच, और सेंधानमक सातों चीजें समभाग में पिलाने से तक्षक विप के विकार भी नष्ट होजाते हैं ।।

तण्डुलीयक मूलन्तु पीतं तण्डुलवारिणा–
तक्षकेणापि दृष्टंहि–निर्विपं कुरुते नरम्–, (यो. र.)

चावलों के धोवन के साथ चौलाई की जड़का चूर्ण पिलाने से विप नष्ट होजाता है ।

शिरीप पुष्प स्वर से–सप्ताहं मरिचं सितम्–
भावितं सर्प दृष्टानां–पाने नस्याञ्जने हितम् । (यो. र.)

सिरस के फूलों के रस में सफेद मिर्चों को सात दिन तक भावना देनी चाहिये । यह मिर्चें पिलाने अंजन कराने-और नस्य में काम जाती हैं:।

नक्तमालाद्यञ्जन

नक्तमाल फल व्योप—विल्व मूल निशाद्वयम्-
सौरसं पुष्पमाजंवा मूत्र बोधन मंजनम् ।—(यो. र.)

बड़े करंज के फल, सोंठ मिर्च, पीपल, वेलकीजड़, हल्दी दारुहल्दी, सब चीजों को सिरस के फूलों के स्वरस में घोटकर अंजन करना चाहिये। अथवा बकरी के मूत्र में घिसकर अंजन करना चाहिये।—

मृत्युपाशच्छेदि घृत

अभयां रोचनां कुष्ठ मर्क पत्रं तथोत्पलम् ।
नल वेतस्स मूलानि गरलं सुरसां तथा ॥
सकलिङ्गा समंजिष्ठा मनन्ताञ्च शतावरीम् ।
शृङ्गाटकम् समङ्गाञ्च पद्म केशर मित्यपि ।
कल्कीकृत्य पचेत् सर्पिः पयो दद्याच्चतुर्गुणम् ॥
सम्यक् पक्वेऽवतीर्णे च शीते तस्मिन् विनिक्षिपेत् ।
सर्पि स्तुल्यं भिषक् क्षौद्रं कृत रक्षं निधापयेत् ।
नाशयत्यञ्जनाभ्यङ्ग पान बस्तिषु योजितम् ॥
सर्प की टाखु लूतादि दष्टानां विषहृत्परम् ।

(भै० रत्नावली)

गाय का घी २ प्रस्थ, दूध ८ प्रस्थ। कल्कार्थ, हरीतकि, गोलोचन, कूठ, आक के पत्ते कमल की जड़, नल की जड़, बेत की जड़, मीठा विष, तुलसी, इन्द्रजौ, मंजीठ, अनन्तमूल, शतावर सिंघाड़ा, लज्जालु, कमलकेशर, सब मिली हुई चीजें ८ पल। यथा विधि घी पाक करके रखलें। ठंडा होने पर २ प्रस्थ शहत और मिला लेना चाहिये। इसघृत का अञ्जन, नस्य अभ्यङ्ग पान और वस्तिकर्म से उपयोग किया जाता है। यह जंगम

विष की प्रसिद्ध दवा है:।

शिखरि घृत

-शिखरि स्वर से नैव कल्कान् दत्वाच दाडिमम्-
कुष्ट मेलाद्वयं शृङ्गी शिरीप ममृतं वचाम्-
परशू पारिभद्रञ्च चन्दनं तगरं मुराम्-
पचेत् सर्पिस्त्वसलिलं मन्द मन्देन वह्निना।
घृतमेत न्निमहन्त्याशु-निखिलान विप जान् गदान्-
सान्निपात ज्वरं घोरं ज्वरांश्च विपमांस्तथा।-

गव्य घृत १ सेर,। अपामार्ग का रस ४ सेर,। कल्कार्थ-, अनार का छिलका, कूठ छोटी वड़ी इलायची, काकड़ासिंगी, शिरीप की छाल, मीठा विप, वच कुदालिया- फरहद की छाल लाल चन्दन, तगर और मुरामांसी, सब चीजें मिलित १ पाव यथा विधि पाक करके घी को रख लेना चाहिये। यह घी विप विकारों को नष्ट करता है:।-

तण्डुलीय घृत

तंडुलीयक मूलेन गृहधूमेन चैकत:-
क्षीरेणच घृतं सिद्धं समस्त विप रोगनुत्- (मै. र)

गायका घी १ सेर, वकरी का दूध ४ सेर,। कल्कार्थ- चौलाई की जड़ और घरका धूआं मिलित एक पाव। यथा विधि पाक करलें। विप विकारों को यह घी नष्ट करता है-। साधारण मात्रा आधा तोला—

विप वज्रपात रस

निशां सटंकञ्च सजातिकोपं–तुत्थं समांशां कुरुदेवदाल्या :।
रसेन पिसष्ट्वा विप वज्पातो रसो भवेत् सर्व विषापहन्ता।
मापोऽस्य संजीवयति प्रयुक्तो नृमूत्र योगेनच कालदुष्टम्-।

हल्दी, सुहागा, जावित्री, नीलाथोथा, इन्हें समपरिणाम में मिला-देवदाली के रससे घोटकर गोली बनालें, । १ माशे की मात्रा नर मूत्र के साथ लेने से वमन होके विष नष्ट होजाता है:।

भीमरुद्र रस

मन: शिलाल मरिचै दारुणा दरदेनच
अपामार्गस्य हेम्नश्च हयमार शिरीपयो:—।
मूलै रुद्राक्षतो येन विष्णु क्रान्ता म्बुनातत:—
शतधा भावितै: कुर्यात्—वटिका मुद्ग सम्मिता:—।
व्यालदष्ट पीतविपं–निरीन्द्रिय मचेतनम्
पुन: संजीवयेदेष:—भीमरुद्राभिधो रसः—।

शुद्ध मन: शिला, शुद्ध हरिताल, काली मिर्च, संखिया, हिंगुल, अपामार्ग की जड़, धतूरे की जड़, कनेर की जड़, शिरीष की जड़, प्रत्येक का समभागचूर्ण, अपराजित और रुद्राक्ष के रससे सौ वार भावना देकर मूंग के बराबर गोली बनालें। यह वटी संज्ञाहीन विषविकृत रोगी को भी स्वस्थवना देती है :।

कूलिका दिवटो

कूलिक: सप्तपर्णञ्च कुष्टं तोलक सम्मितम्-
माप मानं तथा दारु- मर्दयेदर्क वारिणा—।
सर्षपाभां वटीं कृत्वा योजयेत् पयसा सह-

अपि तत्तक दष्टञ्च मृतकल्पं हत स्वरसम्—
पुनः संजीवये देपा सर्व विप विनाशिनी—
कूलिका दिर्वटी हन्ति—ज्वरांश्च विपमांस्तथा—।

कालिया कड़ा की जड़ सतौने की छाल, कूठ, प्रत्येक १-१ तो०, संखिया १ माशा-इन्हें एकत्र मिला मदार की जड़ के काढ़े से घोटकर सरसों के बराबर गोली बनालें। दूध के साथ ये गोली देनी चाहिये। कठिन और मुमुर्षु दशा में यह लाभ करती है।-

शीघ्र ही प्रकाशित होने वाली
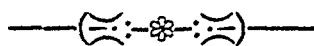
—उपयोगी पुस्तकें—

'स्नान, और उसके चमत्कार'

(लेखक राजवैद्य पं० रवीन्द्र शास्त्री कवि भूषण)

इसमें मानव मात्र के लिये आवश्यक और उपयोगी स्नानों की विधि,—भिन्न भिन्न स्थानों के शरीर पर प्रभाव, किस स्नान से किस रोग में लाभ होता है, रोगानुसार स्नान, जल का प्रभाव आदि पर बहुत सुन्दर प्रकाश डाला है।

पुस्तक मिलने का पता—

ांकर प्रेस बेलनगंज, आगरा।

आतशक और उसकी चिकित्सा

(लेखक राजवैद्य पं० रवीन्द्र शास्त्री 'कवि भूषण')

आतशक-सिफलिस, संसार का सबसे पाजी
रोग है, इस एक रोग से ही सभी रोग हो
जाते हैं और यह पीढ़ी दर पीढ़ी
चलने वाला भयानक कोढ़ है।

इस पुस्तक में इसका पूरा इतिहास कारण लक्षण
और अनुभूत चिकित्सा है, जो प्रत्येक मनुष्य
के लिये समान रूप से उपयोगी है।

——:※:——

नपुंसकता

[ले० राज वैद्य, पं० [रवीन्द्र शास्त्री, 'कविभूषण']

——:(ᕗ:()-():ᕗ):——

नपुंसकता, नामर्दी, आज कल की सब से
बेहूदी बीमारी है, नौजवानी में बुढ़ापा
लाने वाले-इस रोग के कारण, लक्षण
और चिकित्सा को पढ़के आप
स्वयं अपना इलाज कर
सकते हैं।

——:❀:——

मिलने का पता—

शंकर प्रेस बेलनगंज,

आगरा।